दलित जातियों में राजनीतिक अभिज्ञान एवं वर्ग जागरूकता

डॉ0 ओम प्रकाश कुमार*

वर्तमान भारतीय समाज में दलित जातियों में विभिन्न कारणों से बढ़ रही राजनीतिक जागृति अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण होती जा रही है। सामाजिक आर्थिक तथा राजनीतिक सभी दृष्टियों से दलित जातियों में बढ़ती हुई राजनैतिक जागृति एक महत्वपूर्ण सामाजिक वास्तविकता है। स्वतंत्रता पूर्व विभिन्न कारणों से दलित जातियों में राजनीतिक जागृति अविकसित थी किन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ ही औपनिवेशिक आर्थिक ढांचे का विनाश हुआ और स्वतंत्र भारत में सामाजिक उत्थान के लिये किये गये सक्रिय प्रयासों के फलस्वरूप अन्य सभी वर्गों के साथ ही दलित जातियों में राजनीतिक जागृति बढ़ने लगी और वे राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाने लगी। इतना ही नहीं उनकी राजनीतिक चेतना ने अनेक संगठनों तथा राजनीतिक दलों को बल प्रदान किया है। अतः वर्ग जागरूकता के विश्लेषण में उनकी राजनीतिक जानकारी के स्वरूप की व्याख्या करना आवश्यक हो जाता है।

किसी व्यक्ति विशेष की राजनीतिक समझ को निर्मित करने में तथा राजनीतिक सम्बद्धता एवं सहभागिता की मात्रा को निर्धारित करने में उसके राजनीतिक अभिज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। राजनीतिक जानकारी के स्तर से किसी भी समूह अथवा उसके सदस्यों की राजनीतिक सहभागिता का पता चलता है। बिना अभिज्ञान के क्रिया नहीं होती है, अतः दलित जातियों की राजनीतिक सहभागिता का सम्बन्ध भी उनकी राजनीतिक जानकारी तथा समझ से होता है। अतएव यहाँ पहले उनके राजनीतिक अभिज्ञान के स्तर को ज्ञात किया जा रहा है।

सर्वप्रथम उत्तरदाताओं की वर्ग जागरूकता के सन्दर्भ में राजनीतिक दलों के बारे में उनकी जानकारी का विवेचन किया जा रहा है।

अध्ययन में दलित जातियों के राजनीतिक अभिज्ञान के जिन खास पक्षों के बारे में चर्चा की जा रही है उनमें से प्रथम, राजनीतिक दलों के विषय में जानकारी है। राजनीतिक दल विभिन्न वर्गों की रूचियों एवं अभिलाषाओं से काफी गहरा सम्बन्ध रखते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के विभिन्न वर्गों– उच्च जातियाँ, निम्न जातियाँ, किसान भूमिहीन, मजदूर आदि का अपने–अपने स्वार्थों एवं सामाजिक सम्बन्धों के अनुसार राजनीतिक लगाव होता है और यह लगाव अन्य बातों के अलावा वर्गीय स्वाथ्स से बहुत अधिक मात्रा में प्रभावित होता है। यहां हम इस सन्दर्भ में अध्ययन क्षेत्र की दलित जातियों के राजनीतिक दलों सम्बन्धी अभिज्ञान को देखेंगे। दलित जातियों के लोग किन–किन राजनीतिक दलों का नाम जानते हैं तथा आन्दोलन में भाग लेते हैं? इन बातों की जानकारी प्राप्त की गयी जिसे सारणी 1.1 में दर्शाया गया है।

***एम.ए.,पीएच.डी. राजनीतिशास्त्र ग्राम–गेन्दा बिगहा, पो0 धबल बिगहा,जहानाबाद बिहार**

सारणी संख्या–1.1

दलित जातियों में वर्ग जागरूकता एवं राजनीतिक दलों के बारे में जानकारी

जागरूकता स्तर	राजनीतिक दलों की जानकारी					अन्य
	कांग्रेस	सपा	भाजपा	राजद	जदयू	
अति जागरूक	98 (97.03)	97 (96.04)	99 (98.02)	89 (88.19)	89 (88.19)	81 (80.19)
सामान्य जागरूक	78 (98.73)	77 (97.47)	78 (98.73)	77 (47.47)	77 (97.47)	49 (62.03)
अन्य जागरूक	20 (100)	20 (100)	20 (100)	20 (100)	19 (95)	13 (65)

नोट :– कोष्ठक में दिये गये आंकड़े प्रतिशत में हैं।

सारणी 1.1 में अंकित प्रतिशतों को देखने से ज्ञात होता है कि उक्त क्षेत्र के दलित जाति के लोगों में राजनीतिक दलों के बारे में जानकारी की जहाँ तक बात है जागरूकता श्रेणी के तीनों वर्गों के अधिकांश लोग प्रमुख राजनीतिक दलों को जानते हैं। इनमें सर्वाधिक प्रतिशत भारतीय जनता पार्टी एवं राजद को जानने वालों का है। भारतीय जनता पार्टी को जानने वालों का प्रतिशत तीनों जागरूकता स्तर के अनुसार क्रमशः 98.02, 98.73 एवं 100 प्रतिशत है जबकि राजद को जानने वाले दलित जातियों के लोगों का प्रतिशत जागरूकता की क्रमशः गिरती हुई श्रेणी में क्रमशः 98.02, 97.47 तथा 100 है। उक्त क्षेत्र के जनाधार के हिसाब से गौड़ स्थान रखने वाले राजनीतिक दलों जैसे– कांग्रेस, समाजवादी पार्टी तथा जदयू आदि पार्टियों को भी जानने वालों का प्रतिशत उपर्युक्त दोनों राजनीतिक दलों भारतीय जनता पार्टी एवं राजद से ज्यादा कम नहीं है बल्कि कह सकते हैं कि लगभग बराबर ही है। कांग्रेस को तीनों घटते जागरूकता स्तर के लोगों में क्रमशः 97.03, 98.73 तथा 100 प्रतिशत लोग जानते हैं। समाजवादी पार्टी को क्रमशः 96.

04 प्रतिशत अतिजागरूक, 97.47 सामान्य जागरूक तथा 100 प्रतिशत अल्पजागरूक दलित जाति के लोग जानते हैं। जदयू को 88.19 प्रतिशज अतिजागरूक, 97.47 सामान्य जागरूक तथा 95 प्रतिशज अल्पजागरूक दलित जाति के लोग जानते हैं। अध्ययन क्षेत्र जहानाबाद के दलित जाति के उत्तरदाताओं में राजनीतिक दलों से सम्बद्धता का कारण भिन्न–भिन्न पाया गया।

दलित जाति के उत्तरदाता जदयू को इसलिए अच्छा बताते हैं कि यह दलित जातियों के हितों एवं सम्मान के प्रति ज्यादा सजग हैं तथा उसके लिए ज्यादा जुझारू रूख अख्तियार करती है। सरकार द्वारा लागू पंचायतीराज अधिनियम के कारण ग्रामीण स्तर के चुनावों तक में राजनीतिक चेतना का विस्तार हुआ है। पहले दलित जातियों की मतदान में हिस्सेदारी कम थी अब अन्य वर्गों से अधिक हो गयी है तथा राजनीति उनके जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित कर रही है। आधुनिक समाज में विभिन्न वर्गों के बीच संघर्षात्मक प्रवृत्तियों को बढ़ाने में राजनीतिक दलों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है, जिस प्रकार राजनीतिक दलों की संख्या बढ़ी है तथा कुछ खास दलों द्वारा क्षेत्रीय विकास को प्रमुखता दी जा रही है उससे भी इन दलों का क्षेत्रीय जनाधार राष्ट्रीय दलों की अपेक्षा बढ़ा है। अध्ययन क्षेत्र के कुछ उच्चवर्गीय युवकों से सम्पर्क एवं व्यक्तिगत चर्चा के दौरान यह बात सामने आयी है कि इन क्षेत्रीय दलों के कार्यकर्ता दलित जातियों के बीच जाते हैं तथा अपने दलों के घोषित एवं अघोषित नीतियों से उन्हें अवगत कराते हैं। ये कार्यकर्ता उनके क्षेत्रीय विकास के कार्यक्रमों के प्रति ज्यादा रूचि दिखाते हैं, जिससे उनके बीच उनकी लोकप्रियता बढ़ती है।

सारणी संख्या–1.2

वर्ग जागरूकता, आन्दोलन सम्बद्धता एवं राजनीतिक दलों का अभिज्ञान

जागरूकता स्तर	आन्दोलन सम्बद्धता एवं राजनीतिक दलों की जानकारी											
	आन्दोलन में भाग लिया						आन्दोलन में भाग नहीं लिया					
	कांग्रेस	सपा	भाजपा	बसपा	कम्युनिष्ट	अन्य	कांग्रेस	सपा	भाजपा	राजद	जदयू	अन्य
अति जागरूक	89 (88.19)	84 (83.17)	88 (87.13)	89 (88.19)	81 (80.19)	76 (75.25)	10 (9.90)	10 (9.09)	10 (9.90)	9 (8.91)	8 (7.92)	11 (10.89)
सामान्य जागरूक	70 (88.86)	71 (89.87)	71 (89.87)	71 (89.87)	69 (87.34)	43 (54.43)	7 (8.86)	6 (7.59)	7 (8.86)	6 (7.59)	7 (8.86)	6 (7.59)
अन्य जागरूक	7 (35)	7 (35)	7 (35)	7 (35)	7 (35)	6 (30)	12 (60)	12 (60)	12 (60)	12 (60)	11 (55)	10 (50)

नोट :– प्रतिशत को कोष्ठक में प्रदर्शित किया गया हैं।

सारणी 1.2 के आंकड़ों से यह बात स्पश्ट हो जाती है कि अतिजागरूक दलित जातियों में सर्वाधिक लोग आन्दोलन में भाग लेते हैं और उन्हीं को ज्यादा राजनीतिक दलों की जानकारी है। आन्दोलन में भाग लेने वाले अति जागरूकों में कांग्रेस, सपा, भाजपा, राजद, जदयू एवं अन्य दलों को क्रमषः 88.9, 83.17, 87.13, 88.19, 80.19 तथा 75.25 प्रतिषत लोग जानते हैं। जबकि आन्दोलन में भाग न लेने वालों में उपर्युक्त क्रम में ही 9.90, 9.40, 9.90, 8.91, 7.29 तथा 10.89 प्रतिषत लोग इन राजनीतिक दलों को जानते हैं। इस प्रकार तथ्यों के विष्लेशण से यह बात प्रमाणित होती है राजनीतिक चेतना, आन्दोलन सहभागिता एवं वर्ग जागरूकता एक–दूसरे को प्रभावित करते है। यदि राजनीतिक चेतना में कमी पायी जाती है तो आन्दोलन सहभागिता एवं वर्ग जागरूकता में भी कमी हो जाती है। इसके विपरीत, यदि एक में वषद्धि होती है तो दूसरे में भी वषद्धि दिखाई पड़ती है। दलित जातियों में राजनीतिक दलों की जानकारी के सिलसिले में एक प्रमुख तथ्य यह है कि राजनीतिक दलों के बारे में प्रथम जानकारी उन्हें कहाँ से प्राप्त हुई, अध्ययन के दौरान यह बात स्पश्ट हुई कि उन्हें इसकी प्रथम जानकारी उनके जाति हितों एवं आर्थिक हितों के प्रति अधिक सम्वेदनषील दलों के कार्यकर्ताओं, चुनाव, राजनीतिक प्रचार के माध्यमों तथा अपने आसपास के वातावरण से ही इन राजनीतिक दलों के बारे में जानकारी प्राप्त हुई।

संदभ सूची

1. चतुर्वेदी, दिनेशचन्द्र : भारतीय षासन और राजनीति, मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ, 1976
2. कोठारी, रजनी : कास्ट इन इंडियन पॉलिटिक्स, देल्ही ओरिएन्ट लागमैन लिमिटेड, 1970
3. कास्ट, क्लास एण्ड पॉलिटिक्स इन केरला पोलीटिकल साइंस रिव्यू, राजस्थान विश्वविद्यालय, मई 1964
4. अटल योगेशः लोकल कम्युनिटीज एण्ड नेशनल पॉलिटिक्स, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली 1971